अपनाएं इको विसर्जन की राह

नवनीत कुमार गुप्ता

हमारा देश परम्पराओं और त्योहारों का देश है। यहां हर दिन कोई-न-कोई त्योहार होता है। त्योहार हममें नई ऊर्जा का संचार करने के साथ ही भाईचारे और स्नेह की भावना को बढ़ाते हैं। हम भारतवासी बड़े धार्मिक लोग हैं। पूजा-पाठ हमारे दैनिक जीवन के अभिन्न अंग हैं। लेकिन इन धार्मिक भावनाओं के कारण यदि हमारा वातावरण प्रदूषित होता हो तो यह धर्म नहीं है। क्योंकि धर्म में 'बहुजन हिताय' यानी सबके कल्याण की भावना होती है।

आजकल हम जाने-अनजाने, धार्मिक क्रियाकलापों के द्वारा पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रहे हैं। पूजा-पाठ और विभिन्न धार्मिक क्रियाओं के दौरान निकलने वाले फूल-माला, यज्ञ की भस्म व अन्य वस्तुओं के द्वारा न चाह कर भी हम पर्यावरण को प्रदूषित कर देते हैं। मूर्ति स्थापना वाले त्योहारों, जैसे गणेश पूजा और दुर्गा पूजा के दौरान तो हम बड़े पैमाने पर पर्यावरण को प्रदूषित कर देते हैं। इस प्लास्टिक युग में धार्मिक वस्तुओं में भी प्लास्टिक का चलन बढ़ा है और यह तो हम जानते ही हैं कि प्लास्टिक हमारे पर्यावरण के लिए कितना नुकसानदायक है। प्रकृति में प्लास्टिक वर्षों तक अपघटित नहीं होता। जलाने पर यह पानी, मिट्टी और हवा को प्रदूषित करता है। पहले जहां पूजा-पाठ में प्राकृतिक साम्रगियों का उपयोग होता था वहीं अब अधिकतर चीज़ें प्लास्टिक की बन रही हैं। अब तो पवित्र प्रतिमाओं पर फूल भी प्लास्टिक के चढ़ाए जा रहे हैं। इसी तरह आजकल देव प्रतिमाओं में प्लास्टर ऑफ पेरिस के अलावा तांबा, क्रोमियम, निकल जैसी भारी धातुएं होती हैं। इन प्रतिमाओं को जब नदी या अन्य जल स्रोत में प्रवाहित किया जाता है तो पानी संदूषित हो जाता है।

वैसे हम यह भी नहीं कह सकते हैं कि यज्ञ की भस्म, फूल-माला, देवी-देवताओं की प्रतिमाएं, फोटो और अन्य धार्मिक भावनाओं से सम्बंधित वस्तुएं नदी में न फेंकें या इधर-उधर फेंकें। लेकिन हमें यह तो याद रखना ही चाहिए कि इन सब को नदी में डालना यानी नदी को प्रदूषित करना है जो कानूनन अपराध है। शास्त्रों में भी नदियों को परमात्मा का रूप माना गया है। इसलिए नैतिक व धार्मिक दोनों दृष्टि से नदियों को प्रदूषित करना अपराध है। अभी भी हमारे देश के लोग नदी में स्नान करने से पूर्व उसे प्रणाम करते हैं। वैसे हमारे पुराण तो नदी में छलांग लगाने का भी निषेध करते हैं। तो फिर यज्ञशेष, फूल मालाएं, पूजन सामग्री और मूर्तियों आदि का नदी में विसर्जन तो पाप ही हुआ, जो हम प्रकृति के साथ कर रहे हैं।

अब हमें यह बात समझ लेनी चाहिए कि नदी को प्रदूषण से बचाने का दायित्व आम आदमी का भी है। कर्मकांडों से प्रदूषित होती नदियों के बचाव में प्रत्येक जागरूक व्यक्ति को सरकार के साथ खड़ा होना होगा। और इसके

इको फ्रेंडली पूजा की ओर लोगों का रुझान बढ़ने लगा है। दिल्ली में कश्मीरी गेट पूजा समिति ने इस वर्ष इको फ्रेंडली पूजा को अपनाया है। इस पंडाल में स्थापित होने वाली देवी मां की प्रतिमा को बायोडिग्रेडेबल पदार्थों से बनाया गया है और प्रतिमा को रंगने के लिए भी वनस्पति रंगों का उपयोग किया है ताकि प्रतिमा विसर्जन के बाद पानी प्रदूषित न हो। समिति देवी को पहनाए गए वस्त्रों को नवरात्रि के बाद गरीबों में बांट देगी और पूजा के दौरान एकत्र होने वाले फूलों को इको फ्रेंडली रंग बनाने वाली एक स्वयंसेवी संस्था को दे दिया जाएगा जिसका उपयोग वह प्राकृतिक रंग बनाने में करेगी। इसके अलावा संस्था प्रतिमा को विसर्जन के लिए जल स्रोत तक ले जाने के लिए बैलगाड़ी का उपयोग करेगी।

लिए धार्मिक क्रियाओं की एक इको शैली यानी प्रकृति मित्र तरीके को बढ़ावा देना होगा, जिसमें मूर्तियों को केवल मिट्टी से ही बनाया जाए उनमें किसी प्रकार की विषैली धातु व प्लास्टिक का उपयोग न किया जाए। इसके साथ ही हम पूजित पदार्थों को नदियों में बहाने की बजाय उन्हें वृक्षमूल में रख सकते हैं या खेतों-बगीचों में डाल सकते हैं।

मुंबई में पिछले वर्ष प्रतिमा विसर्जन के लिए बाईस कृत्रिम जलाशय बनवाए गए थे। मुंबई आई.आई.टी. के सहयोग से इन कृत्रिम जलाशयों में प्रतिमा विसर्जन के बाद इसके अवशेषों का पुनर्चक्रण कर इसका इस्तेमाल मूर्तियां, ईंट, टाइल्स बनाने तथा ज़मीन भरने की योजनाओं में किया गया। अब कुछ सामाजिक संस्थाएं पूजन सामग्री के नदियों में विसर्जन से होने वाले नुकसान के बारे में भी जनमानस को चेता रही हैं। हम सभी को इको विसर्जन की राह अपनानी चाहिए ताकि हम पर्यावरण को स्वच्छ रख सकें।

कुछ उपाय

◆ यज्ञ की भस्म, फूल-मालाओं को हम अपने व पड़ोसियों के बगीचे में मिट्टी के साथ मिलाकर बगीचे की उर्वरता बढ़ा सकते हैं।

◆ इसी प्रकार फूल-माला से निकले बीजों से नए पौधे तैयार किए जा सकते हैं। जिनसे जीवन का नया रूप अंकुरित होता है।

◆ देवी-देवताओं की फ्रेम व कांच इत्यादि कबाड़ी को दे सकते हैं व फोटो को हम बगीचे में या साफ-सुधरी जगह पर मिट्टी खोद कर इसमें दबा सकते हैं। राष्ट्र ध्वज तिरंगा फट जाने या जीर्ण होने पर उसे भी तो ससम्मान दफनाया जाता है।

◆ पूजा-पाठ की जो सामग्री घर में इकट्ठी होती रहती है उसे नदी में डालने की बजाय हवन आदि में डाला जा सकता है।

◆ फोटो को मिट्टी में मिला सकते हैं, वह पानी से गल जाता है।

◆ प्रतिमाएं यदि कच्ची मिट्टी की हों तो वो आसानी से पानी में गल जाएंगी।

◆ धार्मिक पंडे-पुजारी धर्म के नाम पर नदियों में विसर्जन के फलस्वरूप होने वाले नुकसान से जनता को परिचित कराएं। ***(स्रोत फीचर्स)***